REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

' मंत्रपुरुष ' कहानी में स्त्री जीवन की त्रासदी

डॉ. अम्बिली वी. एस.
असिस्टेंट प्रोफेसर , हिन्दी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग , एन.एस.एस.हिन्दू कॉलेज ,
पेरुन्ना पी.ओ.,चंगानाचेरी , कोट्टयम , केरल l

प्रस्तावना

सदियों से स्त्री इस पुरुष वर्चस्व समाज में अपनी अस्मिता ढूँढ रही है । पुरुषों द्वारा बनाये गये नियमों के दायरे के भीतर खडी होकर स्त्री अपने अधिकारों को खोज रही है और अपनी प्रस्थिती पर अनगिनत सवाल उठाती रहती है । ऐसे ही असंख्य सवालों एवं विडंबनाओं से घिरी हुई स्त्री के कई रूप श्रीमती दिनेशनंदिनी डालमिया की कहानियों में देखने को मिलते हैं । उनकी रचनाओं में नारी सुलभ कोमल अनुभूतियों के साथ चिन्तन की गहराई समान रूप से दर्ज की गयी है । इस सन्दर्भ में संतोष गोयल जी यों कहते हैं –" उनके लेखन में नारी मन की अंतर्द्वन्द्व तो प्रमुख हैं ही साथ ही अपना परिवेश जिसके बीच वह पली बढी,रही, का भी अत्यंत प्रामाणिक व प्रभावशाली चित्रण है ।" (मंत्रपुरुष तथा अन्य कहानियाँ , संतोष गोयल द्वारा दी गयी भूमिका से) लेखिका ने स्त्री – जीवन की कठोर वास्तविकताओं को महसूस कर उन्हें शब्दों में ढाल दिया है ।

बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी साहित्यकार दिनेश नंदिनी डालमिया का नाम हिंदी लेखिकाओं में महादेवी वर्मा के समकक्ष रखा जाता है। आप गद्य गीत की प्रणेता थीं और आत्मकथात्मक उपन्यास लिखनेवाली प्रथम महिला भी । आप मूलतया कवयित्री थीं । गद्यगीत के पश्चात जब वे कविता लिखने लगीं तो उनके तेवर बदल गए । उनकी बनावट भी काव्यमयी थी । दु:ख उनकी जीवनकथा रही और लेखन उनकी जिजीविषा । शबनम (1937), मौलिक माल, शारदीया , दुपहरिया के फूल ,वंशीरव ,उन्मन ,चन्दन चिंतन, शर्वरी, स्वयंभवा आदि आपके प्रमुख गद्यगीत हैं । आपके उर्बाती,मनुहार,समृंग ,परिच्छाया , इति, जागती हुई रात है औरत, हिरण्यगर्भा, अब नहीं नाचूँगी गोपाला जैसे कविता - संग्रह प्रकाशित हुए हैं । आपने मुझे माफ़ करना, कंदील का धुआँ, आहों की वैसाखियाँ, और सूरज डूब गया, फूल का दर्द, आँख मिचौनी, ये भी झूठ हैं,जहर मोहरा, व्यूह बद्ध जैसी औपन्यासिक रचनाओं का भी सृजन किया है । इसके अलावा डालमिया जी ने तितिक्षा,पीछा करनेवाली आवाज़, मंत्रपुरुष आदि कहानी-संग्रहों का भी प्रकाशन किया है । पंद्रह वर्ष की छोटी आयु से अपनी अंतिम सांस तक की लम्बी यात्रा में उन्होंने कलम और कागज़ को कभी भी नहीं छोड़ा था ।

'मंत्रपुरुष' दिनेश जी की बहुचर्चित कहानियों की श्रेणी में आगे आती है । 'मंत्रपुरुष' कहानी की सुरभि कर्तव्यनिष्ठ, योग्य व अनुभवी पत्रकार है । वह अद्भुत सौन्दर्य लिए थी । औरतों की आँसू बहाने की आदत से उसे बहुत चिढ है । उसका मत है कि आँसू औरत की दुर्बलता प्रदर्शित करते हैं । लेकिन मंत्र पुरुष गुरुजी द्वारा बलात्कार का शिकार बनने के बाद वह पूरी तरह से दुर्बल होकर आँसू बहाती रहती है । उसने इससे पहले बलात्कार विषय पर कई लेख लिखे, इंटरव्यू छापे और जो इसका शिकार हुई उनको न्याय दिलवाने में सहायता की । मगर स्वप्न में भी

उसने यह कल्पना नहीं की थी कि एक दिन वह स्वयं ही इसका शिकार हो जाएगी। वह भी ऐसे व्यक्ति द्वारा जिसका वह हृदय से सम्मान करती थी। वह ही क्यों लाखों लोग उसका आदर करते हैं, उसे भगवान का दर्जा देते हैं और उस पर अंधाधुन्द विश्वास करते हैं। पढी लिखी होते हुए भी सुरभि ने उस पर अंधविश्वास किया और इसी विश्वास के कारण उसे गुरुजी की हैवानियत का शिकार भी होना पड़ा। साधू – सन्यासियों द्वारा किये गए अनेक कुकृत्यों की जानकारी रखने पर भी उसने गुरुजी के आश्रम में आते वक्त कोई सावधानी क्यों नहीं परखी यह सोचकर उसे खुद पर भी क्रोध आया। अपने पर हुए इस अत्याचार की वह स्वयं को भी उत्तरदायी समझती है। सुरभि का मन किया कि चिल्लाकर भगवान से पूछे – "क्या तुम्हें योग्य –अयोग्य की परिभाषा नहीं मालूम। इस व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि बनाया,चमत्कारिक शक्तियाँ दीं। "(मंत्रपुरुष तथा अन्य कहानियाँ , दिनेश नन्दिनी डालमिया,पृ.77)

बदनामी के डर से सुरभि शहर छोड़कर जाना चाहती है। मगर उसका सहयोगी एवं प्रेमी विक्रम उसे अन्याय के खिलाफ लड़ने का आत्मविश्वास दिलाता है। पुलिस में रिपोर्ट करवाने के बाद बात समाचार पत्र में भी छपकर आया। लेकिन इस समाचार पत्र का मालिक गुरुजी का भक्त होने की वजह से सुरभि और विक्रम को नौकरी से हाथ धोना पड़ा। तब सुरभि को आश्चर्य हुआ कि अपराधी पुरुष है या स्त्री ! शिकारग्रस्त स्त्री का साथ देने के बजाय इस समाज के टेकेदार अपराधी पुरुष को महान स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। परिणामस्वरूप अपराध करके भी पुरुष बरी हो जाता है। ज़मानत पर छूटने के पश्चात् मंत्रपुरुष योगेश अपना सारा पुराना वैभव खो देता है और उसके व्यवहार में भी परिवर्तन आ जाता है। मुकदमे की अन्तिम सुनवाई के दिन योगेश ने अपने ऊपर लगाया अभियोग स्वीकार कर लिया- "उनसे बलात्कार का नीच अक्षम्य अपराध हुआ है।" (वही, पृ.90) योगेश ने अपराध स्वीकार करके उसे बचानेवालों के प्रयत्न निष्फल कर दिए। पक्षपाती जज साहब ने योगेश को मात्र दो वर्ष की कैद का निर्णय सुना दिया।

योगेश की सजा सुनने के बाद सुरभि का मौन और उसकी उदासी पहले से भी और अधिक गहन हो गया कि अपराधी को प्राणदण्ड या आजीवन कारावास के बदले केवल दो वर्ष की कैद ही मिला – "क्या एक औरत के सम्मान का मूल्य केवल दो वर्ष की कैद है?" (वही,पृ. 91)विक्रम ने उसे समझाना चाहा कि योगेश ने अपराध स्वीकार करके अपनी महानता का परिचय दिया है। और वह निर्दोष छूटने से तो अच्छा है कि उसे कैद की सज़ा तो मिला। यह सुनकर सुरभि का व्रणित आत्मसम्मान दर्द से पागलों की तरह चिल्लाने लगी कि, "पुरुष हो न इसलिए उसका पक्ष ले रहे हो। उसका अपराध स्वीकार का पश्चाताप क्या मेरे सम्मान को वापस ला पाएगा। तुम नहीं समझ सकते स्त्री की भावना को। तुम क्या कोई भी पुरुष नहीं समझ सकता। मुझे तुमसे घृणा हो रही है।" (मंत्रपुरुष तथा अन्य कहानियाँ ,दिनेश नंदिनी डालमिया ,पृ.91) इसके बाद सुरभि एक दम भावशून्य हो गयी और उसकी सूनी आँखों को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे एक उखाड़कर फेंका हरा-भरा वृक्ष अपनी मूक भाषा में प्रश्न कर रहा हो, "मेरा कसूर क्या था जो मुझे दंडित किया गया ?" (वही ,पृ.92) यह प्रत्येक उस स्त्री का सवाल है जो पुरुष वर्चस्व समाज में शोषण का शिकार होने केलिए अभिशप्त है। कोई भी नियम या कानून जब पूर्ण रूप से स्त्री का पक्ष लेने केलिए तैयार नहीं है तब उसे अपने हिस्से का न्याय कैसे मिलेगा ? यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है ।